पद १२८

(राग: पिलु जिल्हा - ताल: धुमाळी)

प्रेमा जाणा प्रेमा जाणा। प्रेम परब्रह्म म्हणा।।१॥ अस्ति भाति प्रिय जो आत्मा। प्रेमा जगाचा जगदात्मा।।२॥ मरे उपजेना हा प्रेमा। सर्व विषयीं याचा महिमा।।३॥ उच्च नीच कर्म बंध। प्रेमा नाहीं हा संबंध।।४॥ ज्ञाति वृत्ति प्रेमा प्रगटे। वृत्ति क्षोभे समुळीं आटे।।५॥ जेविं हो आरसा फुटला। अवघा प्रतिबिंब नासला।।६॥ प्रेमशक्ति स्फूर्ति उसळे। भोगी विषयाचे सोहाळे।।७॥ प्रेमा निश्चल ना चंचल। प्रेमशक्ति दावी खेळ।।८॥ शक्ति ज्ञान नुमजे मनीं। व्यर्थ शिणतो ब्रह्मज्ञानी।।९॥ शक्ति ओळखा आपुली। सहज मुक्ति हातीं आली।।१०॥ विषय लोटुनि प्रेमा भजा। मायाधीश हा आत्मा उमजा।।११॥ जडला चिन्मार्ताण्डीं प्रेमा। तोची मुक्त पूर्ण कामा।।१२॥